संगम युग

संगम युग
परिचय
लगभग तीन सौ ईसा पूर्व से तीन सौ ईस्वी के बीच की अवधि को संगम काल के नाम से जाना जाता है।
उस दौरान संगम अकादमियाँ मदुरै के पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण में ही आयोजित की जाती थी।
प्राचीन दक्षिण भारत में आयोजित तीन संगम (तमिल कवियों की अकादमी) का आयोजन किया गया था।
पहला संगम मदुरै में आयोजित किया गया।
दूसरा संगम कपाटपुरम् में आयोजित किया गया।
तीसरा संगम भी मदुरै में आयोजित किया गया।
संगम युग का विवरण देने वाला स्रोत
संगम साहित्य: तोलकाप्पियम् (तमिल साहित्यिक कार्यों में सबसे प्राचीन माना जाता है), एतुत्तौके (अष्ट संग्रह), पत्तुप्पातु (दशगीत), पदिनेकिल्लकणक्कु में (नैतिकता और नैतिकता के बारे में) अठारह कार्य और दो महाकाव्यों के नाम - शिलप्पादिकारम् और मणिमेखलै शामिल हैं।
अन्य स्रोत: यूनानी लेखक जैसे- मेगस्थनीज, स्ट्रैबो, प्लिनी और टॉलेमी; अशोक के अभिलेख कलिंग के खारवेल का हाथीगुम्फा शिलालेख आदि हैं।
संगम काल का राजनीतिक इतिहास
चेर: आधुनिक केरल पर शासन किया; राजधानी: वांजि; शाही प्रतीक: धनुष और तीर; पश्चिमी तट-मुशिरी और तोण्डी के बंदरगाह उनके नियंत्रण में थे। चेरों का सबसे बड़े शासक सेंगुत्तुवन थे जिन्हें लाल या अच्छे चेर भी कहा जाता था।
चोल: शासन का मुख्य क्षेत्र कावेरी डेल्टा था; राजधानी: उरैयूर; पुहार या कावेरीपत्तनम शहर की स्थापना कर उसे अपनी राजधानी बनाया; शाही प्रतीक: बाघ; राजा करिकाल संगम चोलों का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शासक था।
पाण्ड्य: मदुरै में शासन किया; कोरकई- प्रारंभिक राजधानी; शाही प्रतीक: मछली। उन्होंने तमिल संगमों को संरक्षण प्रदान किया।
संगम राजव्यवस्था और प्रशासन
वंशानुगत राजतंत्र का प्रचलन था।
राजा की शक्ति पर पाँच परिषदों का नियंत्रण होता था, जिन्हें पाँच महासभाओं के नाम से जाना जाता था। मंत्री (अमैच्चार), पुरोहित (पुरोहितार), दूत (दूतार), सेनापति (सेनापतियार) और गुप्तचर (ओर्रार) थे।
राज्य की आय का मुख्य स्रोत भूमि राजस्व था।
संगम सोसाइटी
संगम कविताओं में भूमि के पाँच मुख्य प्रकार मिलते हैं - मुल्लै (देहाती), मरुदम (कृषि), पालै (रेगिस्तान), नेथल (समुद्रवर्ती) और कुरिंचि (पहाड़ी)।
पुरुनानरू नामक ग्रंथ में चार वर्गों का उल्लेख मिलता है -जैसे- शुड्डुम वर्ग (ब्राह्मण एवं बुद्धिजीवी वर्ग), अरसर वर्ग (शासक एवं योद्धा वर्ग), बेनिगर वर्ग (व्यापारी वर्ग) और वेल्लाल वर्ग (किसान वर्ग)।
संगम युग के दौरान महिलाओं की स्थिति
महिलाओं का सम्मान किया जाता था और उन्हें बौद्धिक गतिविधियों की अनुमति थी। ओबैयर (Avvaiyar), नच्चेलियर (Nachchellaiyar) और काकईपाडिनियार (Kakkaipadiniyar) जैसी महिला कवियत्री थीं, जिन्होंने तमिल साहित्य में उत्कर्ष योगदान दिया।
महिलाओं को अपना जीवन साथी चुनने की अनुमति थी।
लेकिन विधवाओं का जीवन दयनीय था।
धर्म
प्रमुख देवता: मुरुगन
संगम काल में भारतीय धर्म का प्रभाव भी दिखाई पड़ता है।
इस धर्म को उत्तर से दक्षिण भारत में प्रचार प्रसार का श्रेय अगस्त्य और कौण्डिन्य ऋषि को था।
संगम काल के दौरान पूजे जाने वाले अन्य देवता मयोन (विष्णु), वंदन (इंद्र), कृष्ण, वरुण और कोर्रावई थे।
संगम युग में बौद्ध धर्म और जैन धर्म का भी प्रसार दिखाई पड़ता है।
संगम युग की अर्थव्यवस्था
कृषि अर्थव्यवस्था: चावल मुख्य फसल थी।
सूती, रेशमी, ऊनी जैसे वस्त्र उद्योग सर्वाधिक प्रचलित थे।
संगम युग में धातु उद्योग, चमड़ा उद्योग, मद्य उद्योग, तेल उद्योग, नमक उद्योग जैसे अन्य प्रमुख उद्योग आदि से संबंधित व्यवसाय प्रचलित थे।
उरैयूर में बुने हुए सूती रेशमी वस्रों की पश्चिमी दुनिया में बहुत मांग थी।
बंदरगाह शहर पुहार विदेशी व्यापार का एक महत्त्वपूर्ण स्थान बन गया।
हाथी दाँत उद्योग विदेशी व्यापार के लिये प्रसिद्ध था।
संगम युग का अंत
तीसरी शताब्दी के अंत तक संगम काल धीरे-धीरे पतन की तरफ अग्रसर होता गया।
तीन सौ ईस्वी पूर्व से छह सौ ईस्वी पूर्व के बीच कालभ्रस (Kalabhras) ने तमिल देश पर कब्जा कर लिया था।

//

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/sangam-age